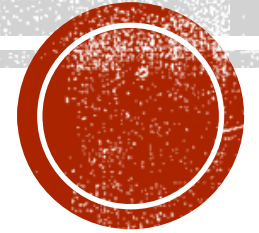


मास्टर्स इन कौटिल्य राज्यशास्त्र और अर्थशास्त्र
पेपर 02 - भारतीय राजकीय, आर्थिक और
सामाजिक विचार

व्याख्यान 1 – 20.11.23



- Harshada Sawarkar
sawarkar.harshada123@gmail.com

प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचार

स्रोत -

वेद - ब्राह्मणग्रन्थ (ऋग्वेद, अथर्ववेद)

स्मृतिग्रन्थ - मनुस्मृति - राजधर्मप्रकरण

रामायण

महाभारत

पुराण साहित्य

राजनीतिपर ग्रन्थ - अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, कामन्दकीय नीतिसार, नीतिप्रकाशिका, नीतिवाक्यामृत आदि

अभिजात संस्कृत साहित्य



वैदिक साहित्य

संहिता

ब्राह्मण

आरण्यक

उपनिषद्



ऋग्वेद

```
graph TD; A[ऋग्वेद] --> B[ऐतरेय ब्राह्मण]; A --> C[शांखायन (कौषीतकि) ब्राह्मण];
```

ऐतरेय ब्राह्मण

शांखायन (कौषीतकि)
ब्राह्मण



शुक्ल यजुर्वेद

शतपथ ब्राह्मण



कृष्ण यजुर्वेद

तैत्तिरीय ब्राह्मण



सामवेद

पंचविंश (तांड्य
या प्रौढ) ब्राह्मण

षड्विंश ब्राह्मण

सामविधान
ब्राह्मण

आर्षेय ब्राह्मण

देवताध्याय
ब्राह्मण

मंत्र (उपनिषद्)
ब्राह्मण

List continues...



सामवेद

संहितोपनिषद् ब्राह्मण

वंश ब्राह्मण

जैमिनीय (तलवकार)
ब्राह्मण

जैमिनीय (आर्षेय)
ब्राह्मण

जैमिनीय उपनिषद्
(छान्दोग्य) ब्राह्मण



अथर्ववेद

गोपथ ब्राह्मण



भारतीय राजनैतिक विचार का प्रारंभ

: - वेदों के संदर्भ - :

राज्यसंस्था का इतिहास

ऋग्वेद में 'राजा' शब्द - किसी समूह के नेता की दृष्टि से

राजा के साथ 'पुरोहित' का भी महत्त्व

राजा - नियुक्त / चुना हुआ

ऐतरेय ब्राह्मण - देवासुर-युद्ध कथा

अराजतया वै नो जयन्ति राजानं करवामह इति। तथेति। ते सोमं राजानमकुर्वन्स्तेन
सोमेन राज्ञा सर्वा दिशोऽजयन्। (ऐ.ब्रा. 1.14.5-6)



शतपथ ब्राह्मण (3.4.2.1-3)

असुरों पर विजय पाने के लिए देवों ने इन्द्र को अपना राजा बनाया।

तैत्तिरीय ब्राह्मण (1.5.9.1)

राजा के बिना कोई युद्ध जिता नहीं जा सकता।



राज्य के अस्तित्व के बारे में महाभारत से मनु की कथा का संदर्भ -

कृत युग - कोई राजा नहीं - इसलिए दण्ड भी नहीं - आत्मसंयम - कुछ समय बाद यह चित्र पलटा - संयम की जगह मोह ने ले ली - धीरे धीरे धर्म का न्हास होता चला गया - अब कुछ विचारी लोग इकट्ठे हुए - उन्होंने समाजव्यवस्था बनाए रखने की कोशिश - किन्तु बहुत समय तक नहीं चल सकी।

सारे लोग ब्रह्मदेव के पास - ब्रह्मदेव ने मनु को आदेश दिए - मनु की अस्वीकृती

बिभेमि कर्मणः पापाद् राज्यं हि भृशदुस्तरम्।

विशेषतो मनुष्येषु मिथ्यावृत्तेषु सर्वदा॥ - मिथ्याचरणी मनुष्यों पर राज्य करना दुष्कर कर्म है, अतः इस कारण लगने वाले पाप का मुझे डर लगता है। मैं राजा होना नहीं चाहता।



किन्तु लोगों ने मनु को आश्चस्त किया –

हमारे पापकर्मों का हिस्सा आप नहीं होंगे। दुराचार का पाप, दुराचारियों को ही लगेगा - 'कर्तृन् एनो गमिष्यति'। और प्रजानन जो पुण्याचरण करेंगे उसका चतुर्थांश राजा को प्राप्त होगा।

और हम कर (tax) के रूप में आपको ये चीजे देंगे -

हर 50 प्राणियों में से 1 प्राणी

हमारे पास जितना सुवर्ण है उसका 50 वा हिस्सा

जितना अनाज उत्पादित किया जाएगा उसका 10 वा हिस्सा

मनु ने ये सारी बातें स्वीकार की।

राजा की उत्पत्ती का दैवी सिद्धान्त



इस दैवी उत्पत्ती के सिद्धान्त को अगर न माना जाए, तो प्रश्न आता है कि राजा संकल्पना आई कहाँ से?

- पुरातन समय में लोगों ने अपने समूह से किसी एक को चुनकर उसे पूरे समूह की जिम्मेदारी दी। यह व्यक्ति शायद कोई पुरोहित / मांत्रिक / वैद्य हो सकता है। उसे ये अधिकार प्राप्त होने के बाद उसने अपनी व्यवस्था बनाकर लोगों पर शासन करना आरम्भ किया होगा।



- पुराने समय में पितृसत्ताक पद्धति - सभी मिलजुलकर 'कुटुंब' में रहते थे। इस कुल में एक 'गृहपती' हुआ करता था, जो अपना शासन / नियंत्रण बाकी के सारे लोगों पर रखता होगा। बाकी के सारे लोग उसकी आज्ञा का पालन करते होंगे।
उसे लोगों को दण्डित करने का / बेचने का अधिकार भी था।
उदा. ऋज्राश्व की कथा / शुनःशेप की कथा

गृहपती = राजा



कुछ समय बाद
'कुटुंब' का विस्तार 'कुलों' में हुआ और
कुलों का 'संघों' में।
इस से गृहपती के अनुशासन का भी विस्तार हुआ।

ऐसे प्रसंग शायद राजा की संकल्पना दृढ होने में आधारभूत रहे होंगे।



विविध ऋग्वेदीय संदर्भों के आधार पर यह भी दिखता है कि उस समय समाज इस तरह से बना हुआ था -

कुटुंब (Family) → जन्मन (कुल) → विश → जन

कुटुंब - सबसे छोटा हिस्सा

जन्मन - कुछ ठोस जानकारी नहीं लेकिन शायद एकही पूर्वज से सम्बद्ध कोई समूह हो सकता है।

विश - ग्रामसमूह। यह सामर्थ्यशाली समूह हुआ करते थे। हर एक विश के पास उसका अपना सैनिकों का समूह था। विश के प्रमुख को 'विशपति' / 'विशां पति' कहते थे।

जन - अनेक विश एकत्र आकर एक 'जन' बनता था। जन का प्रमुख - 'जनपति' / 'राजा'



राज्यसंस्था का स्वरूप -

वैदिक समय में 3 वर्ग - ब्रह्म, क्षत्र, विश

ब्रह्म - पुरोहित वर्ग (यज्ञ के समय की जिम्मेदारियाँ निभानेवाला वर्ग)

क्षत्र - युद्ध के समय में नेतृत्व करना और अन्यथा समाज में अनुशासन बनाए रखना।

विश - साधारण लोग

यहाँ क्षत्र वर्ग में से राजा चुना जाता था।

जो राजा चुना जाएगा, वह 'राजन्य' (अच्छे क्षत्रिय कुल में जन्म होनेवाला) होना चाहिए।

राजा के लिए सबसे महत्वपूर्ण दो गुण - पराक्रम और युद्धनेतृत्व



राजा का चयन -

ता ईं विशो न राजानं वृणाना।

बीभत्सवो अप वृत्रादतिष्ठन्॥ (ऋग्वेद, 10.124.8)

जैसे सर्वसाधारण लोग अपने राजा को चुनते हैं, वैसे ही वृत्र से डरी हुई जलदेवताओं ने इन्द्र को अपना राजा चुना।

या,

त्वां विशो वृणतां राज्याय। (अथर्ववेद, 3.4.2)

हे मानव, विश तुम्हारी अपने राजा के रूप में इच्छा करें।



ऐसे संदर्भों से हम ये जान सकते हैं कि विश यानि साधारण लोगों द्वारा राजा का चुनाव हुआ करता था।

ऐसा भी हो सकता है कि विश द्वारा चुने हुए कुलपती / विश्पती आगे जाकर राजा का चयन करते थे।



राजा का अभिषेक -

राजा के चयन के बाद उसका अभिषेक होता था।

ऐतरेय ब्राह्मण - ऐन्द्र महाभिषेक - इन्द्र के अभिषेक का वर्णन

अभिषेक के समय राजा ऐसे कहता था -

मेरा अभिषेक हो क्योंकि मेरे राज्य में स्थित सभी पेड़-पौधे और मनुष्य सारे तरह की बिमारीयों से या आपत्तियों से मुक्त रहें। मेरी प्रजा किसी भी प्रकार के भय से या विनाश से मुक्त रहे।

(शतपथ ब्राह्मण, 5.2.3.7-9)



याभिरिन्द्रमभ्यषिञ्चत् प्रजापतिः सोमं राजानं वरुणं यमं मनुम्।

ताभिरद्भिरभिषिञ्चामि त्वामहं राज्ञां त्वमधिराजो भवेह॥

- प्राचीनकाल में जिन जलों के द्वारा प्रजापति ने इन्द्र का, सोम का, वरुण का, यम एवं मनु का अभिषेक किया था, उस दध्यादि सहित जल से मैं तुम्हारा अभिषिंचन करता हूँ कि तुम इस लोक में राजाओं के अधिराज बनो।

महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम्।

देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत्॥

- तुम्हें उत्पन्न करनेवाली मातृरूप देवी ने महान् पुरुषों के मध्य अत्यन्त महान् तुम्हें सभी मनुष्यों के उपर सम्यक् रूप से पालनकर्ता उत्पन्न किया है। अतः आपकी जननी तब स्वयं पुण्यात्मा हुई।



यह अभिषेक पुरोहित के द्वारा किया जाता था। ऋग्वेद और उसके बाद के समय में भी पुरोहित राजा के लिए एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ती मानी जाने लगी।

ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार - पुरोहित - राजा की आधी आत्मा।

युद्ध के समय युद्ध कर प्रजा का रक्षण करना - राजा का कर्तव्य

युद्ध के समय अलग विधियों द्वारा राजा के विजय के लिए प्रयत्न करना - पुरोहित का कर्तव्य



Raghuvamsha Verse

प्रजानां विनयाधानात् रक्षणाद् भरणादपि ।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः ॥

